समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Friday, 25 September 2026

चिखल भरी राहों से शिक्षक बनने तक, आज बच्चों के सपनों को दे रहे नई उड़ान : श्री. रामेश्वर अच्युतराव मोरे की प्रेरणादायक कहानी

Sanket Morankar

Published on 24 Sep 2026

धांडेगांव जैसे छोटे से गांव से शुरू हुआ श्री. **रामेश्वर अच्युतराव मोरे** का सफर आज अनेक विद्यार्थियों के जीवन को शिक्षा और मार्गदर्शन के माध्यम से नई दिशा देने तक पहुंच चुका है। सीमित आर्थिक परिस्थितियों और कठिन रास्तों के बावजूद उन्होंने शिक्षा हासिल करने का अपना संकल्प कभी नहीं छोड़ा।

संघर्ष से शुरू हुई शिक्षा की यात्रा

रामेश्वर मोरे का बचपन साधारण परिवार में बीता। माता-पिता छोटी किराना दुकान और खेती के माध्यम से परिवार का पालन-पोषण करते थे। आर्थिक परिस्थितियां सीमित थीं, लेकिन बेटे को पढ़ाने का सपना हमेशा बड़ा रहा।

कक्षा पांचवीं से उटवद जिला परिषद स्कूल में पढ़ाई के दौरान स्कूल तक पहुंचना भी संघर्ष से कम नहीं था। बारिश में घुटनों तक पानी, पैरों में चिखल और रास्ते में आने वाले नदी-नाले पार करके वे स्कूल पहुंचते थे। कठिन परिस्थितियों के बावजूद पढ़ाई के प्रति उनका उत्साह कम नहीं हुआ।

दसवीं के बाद उन्होंने विज्ञान शाखा से शिक्षा प्राप्त की और आगे अंग्रेजी माध्यम से D.Ed. की पढ़ाई पूरी की। ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने के कारण यह यात्रा आसान नहीं थी, लेकिन मेहनत और जिद के बल पर उन्होंने शिक्षा पूरी की।

नंदुरबार में बने प्राथमिक शिक्षक

शिक्षा पूरी करने के बाद उन्हें नंदुरबार जिले में जिला परिषद स्कूल में प्राथमिक शिक्षक के रूप में सरकारी नौकरी मिली। यह सफलता उनके माता-पिता के वर्षों के त्याग और संघर्ष की जीत थी।

लेकिन शिक्षक बनने के बाद उनका दृष्टिकोण केवल पाठ्यक्रम पूरा करने तक सीमित नहीं रहा। उनके मन में सवाल उठा कि जिन

कठिनाइयों का सामना करके उन्होंने शिक्षा हासिल की, वही कठिनाइयां उनके विद्यार्थियों को क्यों सहनी चाहिए ?

यही विचार उनके शिक्षक जीवन की दिशा बना।

आदिवासी क्षेत्र में लगभग दस वर्षों की सेवा

नंदुरबार के आदिवासी क्षेत्र में लगभग दस वर्षों तक सेवा करते हुए उन्होंने विद्यार्थियों और ग्रामीण परिवारों की परिस्थितियों को करीब से समझा। पहाड़, बारिश, हरियाली और ग्रामीण जीवन के अनुभवों ने उनके व्यक्तित्व और सोच को भी प्रभावित किया।

इसी दौरान उनकी साहित्यिक रुचि को भी नई दिशा मिली। कविता और लेखन के माध्यम से वे अपने अनुभवों और विचारों को अभिव्यक्त करने लगे।

एक यूनिफॉर्म ने बदल दी बच्ची की जिंदगी

एक बार एक बच्ची लगातार स्कूल से अनुपस्थित रहने लगी। कारण जानने के लिए रामेश्वर मोरे उसके घर पहुंचे। वहां पता चला कि उसके पास स्कूल जाने के लिए उचित कपड़े तक नहीं थे।

उन्होंने उसकी परिस्थिति को समझते हुए शासन की ओर से मिलने वाली स्कूल यूनिफॉर्म उस बच्ची तक पहुंचाने में मदद की। इसके बाद वह बच्ची नियमित रूप से स्कूल आने लगी और आगे चलकर एक अच्छी कबड्डी खिलाड़ी बनी।

इस अनुभव ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि शिक्षक की छोटी-सी पहल भी किसी विद्यार्थी के जीवन में बड़ा परिवर्तन ला सकती है।

जालना में भी जारी रहा विद्यार्थियों के लिए काम

नंदुरबार में लगभग दस वर्षों की सेवा के बाद उनका स्थानांतरण जालना हुआ। स्थान बदला, लेकिन विद्यार्थियों के लिए काम करने का उद्देश्य वही रहा।

विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करना, उनकी प्रतिभाओं को अवसर देना और शिक्षा को आनंददायी बनाना उनकी कार्यशैली का हिस्सा रहा।

दिनभर विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक जिम्मेदारियां निभाने के बाद कई बार विद्यालय के प्रशासनिक कार्य रात में पूरे करने पड़ते थे।

शिक्षा के साथ साहित्य और रचनात्मकता

शिक्षण कार्य के साथ साहित्य लेखन में उनकी रुचि भी जारी रही। कविता और लेखन के माध्यम से समाज से जुड़ने का प्रयास किया। बच्चों के लिए शैक्षणिक खेल तैयार करने की दिशा में भी उन्होंने काम किया, ताकि बच्चे खेल-खेल में मूल्य शिक्षा, विचारशक्ति और सहयोग जैसी बातों को समझ सकें।

माता-पिता की सेवा को भी उन्होंने अपने जीवन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी माना। जिन माता-पिता ने कठिन परिस्थितियों में उनकी शिक्षा के लिए त्याग किया, उनके प्रति कृतज्ञता और सेवा की भावना हमेशा उनके जीवन का हिस्सा रही।

श्री. रामेश्वर अच्युतराव मोरे की कहानी केवल एक शिक्षक की सफलता की कहानी नहीं, बल्कि संघर्ष से सीख लेकर दूसरों के लिए रास्ते आसान बनाने की कहानी है।

धांडेगांव की चिखल भरी राहों से शुरू हुआ उनका सफर आज विद्यार्थियों के भविष्य को शिक्षा, अवसर और मार्गदर्शन देने तक पहुंच चुका है।

जिस बच्चे ने कभी पानी और चिखल से होकर स्कूल का रास्ता तय किया था, वही आज शिक्षक बनकर बच्चों के सपनों की राह आसान करने का प्रयास कर रहा है।

उनका जीवन यही संदेश देता है—संघर्ष हमे रोकने के लिए नहीं, बल्कि हमे मंजबूत बनाने के लिए आता है ; और शिक्षा की असली सार्थकता तब है, जब उससे किसी और के जीवन मे भी रोशनी पैदा हो।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.